जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

॥ माह – जनवरी 2025 ॥ अंक – 54 ॥ केवल आंतरिक वितरण हेतु॥

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविका से आत्मनिर्भरता की ओर एक प्रेरणादायक यात्रा
(पृष्ठ – 02)

जीविका के सहयोग से मुन्नी देवी बनी उद्यमी
(पृष्ठ – 03)

समूह से सशक्त हुई गायत्री देवी
(पृष्ठ – 04)

नवाचार और उद्यमिता : महिलाओं के नेतृत्व में बदलता बिहार

बिहार में सामाजिक और आर्थिक बदलाव की नई राह पर चल पड़ा है। यह बदलाव मुख्य रूप से महिलाओं के नेतृत्व और उनकी उद्यमिता की भावना प्रदर्शित कर रहा है। इस बदलाव की बड़ी प्रेरक शक्ति है जीविका, जो महिलाओं को सशक्त बनाने, उनका कौशल विकास करने एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर काम कर रही है।

जीविका का उद्देश्य और प्रभाव

जीविका का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाना है। स्वयं सहायता समूहों के गठन से महिलाएँ संगठित एवं एकजुट हुई हैं। समूह ने उन्हें एक मंच प्रदान किया है, जहाँ वह अपना विचार साझा करती हैं, जहाँ महिलाएँ एक–दूसरे से सीखती हैं और एक मजबूत सामाजिक तंत्र बनाती हैं। इन समूहों के माध्यम से महिलाएँ छोटे–छोटे व्यवसायों की शुरुआत करती हैं, अपने क्षमता को विकसित करती हैं। साथ हीं विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियों से परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार ला ला रही है।

महिलाओं के नेतृत्व से आया सामाजिक और आर्थिक बदलाव :

जीविका ने बिहार की महिलाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित की है। पहले महिलाओं को घर की चारदीवारी तक सीमित माना जाता था, वहीं महिलाएँ आज घर से बाहर निकलकर व्यवसाय संचालन से लेकर नीति निर्माण में भी सक्रीय भूमिका निभा रही हैं। जीविका ने महिलाओं को प्रशिक्षित किया है और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया है जिससे वे अपने परिवार की उन्नति कर रही हैं। अपने गाँव एवं समाज को भी नई दिशा प्रदान कर रही हैं। जीविका के तहत महिलाएँ कई प्रकार के छोटे एवं बड़े उद्यम का संचालन कर रही हैं, जैसे– डेयरी फार्मिंग, सिलाई और कढ़ाई, हैंडमेड उत्पादों का निर्माण, बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, इत्यादि। साथ ही महिलाओं को डिजिटल तकनीक एवं वित्तीय प्रबंधन में भी प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वह अपने व्यवसायों को और सफल बना रही हैं।

नवाचार और उद्यमिता का समर्थन

जीविका के माध्यम से उन्हें किफायती दर पर ऋण, बाजारों तक पहुँच और आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। साथ ही जीविका द्वारा स्थापित नेटवर्क से जुड़कर महिलाएँ एक–दूसरे से अनुभव साझा करती हैं और सुझाव प्राप्त करती हैं, जिससे उनका व्यवसायिक दृष्टिकोण और बेहतर होता है।

बिहार की ग्रामीण महिलाएँ अब केवल घर के कामों तक ही सीमित नहीं हैं। वे आज स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ रही हैं और नवाचार को अपनाकर अपने व्यवसायों को नई ऊंचाइयों तक ले जा रही हैं। उदाहरणस्वरूप, कई महिलाओं ने खुदरा और थोक व्यापार, वस्त्र उद्योग और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है। यह बदलाव न केवल महिलाओं के लिए, बल्कि पूरे राज्य के लिए एक सकारात्मक संकेत है। यह महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को दर्शाता है। वर्तमान में लगभग 35 लाख महिला उद्यमी अपने व्यवसायों का संचालन स्वयं कर रही हैं। समूह से जुड़कर लगभग 34 लाख जीविका दीदियाँ लखपति दीदी के रूप में अपनी पहचान बनायी है।

सामाजिक परिवर्तन और स्थायित्व

जीविका की महिलाओं ने न केवल व्यवसायों में सफलता पाई है, बल्कि उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की दिशा में भी बड़ा कदम उठाया है। महिलाएँ अब समाज में अपनी आवाज उठा रही हैं, वे गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, और परिवार नियोजन जैसे मुद्दों पर चर्चा कर रही हैं। इसके साथ ही, उनकी आर्थिक स्वतंत्रता ने उन्हें निर्णय लेने में सक्षम बनाया है। अनेक सामाजिक कुरीतियों के निवारण हेतु भी कार्य कर रही हैं। आज लाखों महिलाएँ पंचायती राज संस्थायों में प्रतिनिधित्य भी कर रही है।

आज जीविका दीदियाँ नवाचार और उद्यमिता की दिशा में समाज में स्थायित्व और बदलाव लाने की प्रतीक बन चुकी हैं। महिलाएँ अब अपने स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण विकास में सक्रिय योगदान दे रही हैं। वह अपने परिवार और समाज की आर्थिक धारा को बदलने में अहम भूमिका निभा रही हैं। जीविका की पहल ने बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के जीवन में गहरा प्रभाव डाला है। महिलाओं के नेतृत्व में बदलाव, नवाचार और उद्यमिता ने न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से समाज को सशक्त किया है, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी महिलाओं को सम्मान और स्वाभिमान प्रदान किया है।

जीविका से आत्मनिर्भरता की ओर एक प्रेरणादायक यात्रा

भागलपुर जिले के नारायणपुर प्रखंड के रायपुर पंचायत की रंजो देवी का जीवन जीविका से जुड़ने के बाद पूरी तरह बदल गया है। उनकी शादी महज 17 साल की उम्र में नवीन पासवान से हुई थी, जो दैनिक मजदूरी करते थे। आय का स्थाई साधन न होने के कारण परिवार आर्थिक तंगी से गुजर रहा था। चार बच्चों की परवरिश के साथ बढ़ते खर्चों ने स्थिति और भी मुश्किल बना दी थी। इन हालातों में रंजो देवी के लिए बच्चों की परवरिश और परिवार का गुजारा करना बेहद कठिन था।

जून 2018 में रंजो देवी ने शक्ति जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का फैसला किया। समूह से जुड़ने के बाद उन्हें आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिली। उन्होंने सामुदायिक निवेश निधि से 8,000 रूपये ऋण लिया और बकरी पालन शुरू किया। इससे उन्हें थोड़ी आय होने लगी, लेकिन परिवार की आय बढ़ाने के लिए उन्होंने और अन्य व्यवासय करने की ठानी। इसके लिए उन्होंने समूह से 40,000 रुपये ऋण लेकर किराना दुकान शुरू की।

दुकान के लिए थोक सामग्री खरीदने के बाद उन्होंने समूह की दीदियों के बीच अपनी दुकान का प्रचार किया। धीरे–धीरे दुकान में ग्राहकों की संख्या बढ़ी और बिक्री अच्छी होने लगी। अब रंजो देवी प्रतिदिन 300–400 रुपये तक की कमाई कर लेती हैं। इससे उनके परिवार की जरूरतें पूरी होने लगीं और उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

रंजो देवी कहती हैं, ''जीविका से जुड़ने के बाद मुझे नई राह और आत्मविश्वास मिला। अब मैं अपने परिवार को बेहतर भविष्य बनाने में सक्षम हूँ। जीविका ने मेरे जीवन में नई उम्मीदें जगाई हैं।''

खेती, दूध और फल व्यवसाय से आत्मनिर्भरता की ओर

भोजपुर जिले के बिहिया प्रखंड के ओसाई गाँव की रहने वाली अमलावती देवी का जीवन जीविका से जुड़ने के बाद पूरी तरह बदल गया। उनका परिवार खेती पर निर्भर था। उनके पति राजकिशोर सिंह खेती करते थे, जबकि अमलावती देवी गृहिणी थीं। तीन बेटियाँ और दो बेटों वाले इस परिवार को खेती से इतनी आमदनी नहीं हो पाती थी कि परिवार का अच्छे से भरण–पोषण हो सके। पैसे की तंगी के कारण कई बार मुश्किलें झेलनी पड़ीं। एक वार जब उनके छोटे बच्चे की तबीयत खराब हुई और पास–पड़ोस में मदद मांगने पर भी किसी ने पैसा नहीं दिया था।

वर्ष 2014 में जब उन्हें जीविका समूह के बारे में जानकारी मिली, तो उन्होंने ज्योति जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का निर्णय लिया। समूह से जुड़ने के बाद पहली बार उन्होंने 20,000 रुपये ऋण लिया और उसे खेती में लगाया। इससे धान की अच्छी पैदावार हुई और उन्होंने 20 क्विंटल धान बेचकर 50,000 रुपये की आय अर्जित की। पुनः उन्होंने 50,000 रुपये का और ऋण लिया और एक भैंस खरीदी। भैंस से प्रतिदिन 5 लीटर दूध मिलता था, जिसमें से 4 लीटर दूध बेचने लगीं। दूध की बिक्री से धीरे–धीरे आय बढ़ने लगी। उन्होंने समूह से पुनः 20,000 रुपये ऋण लेकर एक ठेला खरीदा और फल बिक्री का काम शुरू किया। उनके पति फल बेचते हैं, जिससे हर महीने 9 से 10 हजार रूपये तक का मुनाफा हो जाता है। आज अमलावती देवी खेती, दूध और फल व्यवसाय से आत्मनिर्भर बनी हैं। उनकी आय से बच्चों की परवरिश और बेटियों की शादी भी संभव हो पाई है।

अमलावती कहती हैं, ''जीविका से जुड़ने से मेरी जिंदगी बदल गई है। अब न केवल मेरी आय बढ़ी है, बल्कि मुझमें आत्मविश्वास भी आया है।''

पशु सखी के रूप में आत्मनिर्भरता की मिसाल

गया जिले के तरवा फतेहपुर प्रखंड के सुंदरबीघा गाँव की रहने वाली गीता कुमारी, जीविका से जुड़कर अपने जीवन को एक नई दिशा दी है। पहले वह केवल अपने समूह की सदस्य के रूप में बचत करती थीं और बैठकों में भाग लेती थीं। जीविका कर्मी और बुक कीपर ने ग्राम संगठन की बैठक में पशु सखी बनने के अवसर की जानकारी दी। जब गीता को यह बताया गया कि दसवीं पास और पशुपालन में रुचि रखने वाली महिलाएँ आवेदन कर सकती हैं। उन्होंने अपनी योग्यतानुसार आवेदन किया और चयनित होकर जनवरी 2023 से पशु सखी के रूप में काम करना शुरू किया।

गीता कुमारी ने जीविका और बिहार सरकार के सहयोग से प्रशिक्षण लिया और अब अपने पंचायत में पशुपालकों को पशुपालप से जुड़ी सेवाएँ प्रदान करती हैं। वह बकरियों की देखभाल, उनकी बीमारियों का इलाज और रोकथाम की जानकारी प्रदान करती हैं। ग्राम संगठन की बैठकों से लेकर घर–घर जाकर वह समुदाय को पशुपालन के बेहतर तरीकों के बारे में जागरूक करती हैं।

उनके प्रयासों से पंचायत में 200–300 बकरियों एवं अन्य पशुओं की देखभाल होती है। आज गीता कुमारी को उनके क्षेत्र में एक पशु संरक्षक के रूप में पहचाना जाता है। उनके काम से पंचायत की अन्य महिलाएँ बेहद खुश हैं। गीता दीदी की बढ़ती आय से उनके बच्चे अच्छी शिक्षा पा रहे हैं। उनके परिवार की आर्थिक तंगी खत्म हो गई है, और अब वे खुशहाल जीवन जी रहे हैं। गीता कुमारी ने साबित किया है कि मेहनत और अवसरों का सही उपयोग करने से जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है।

जीविका के सहयोग से मुन्नी देवी बनी उद्यमी

मधेपुरा जिले के कुमारखंड प्रखंड के सिहपुर गढ़िया पंचायत की रहने वाली मुन्नी देवी का जीवन कठिनाइयों से भरा था। 15 साल पहले वे अपने पांच छोटे बच्चों के साथ गांव में रहती थीं, जबकि उनके पति परिवार का भरण–पोषण करने के लिए दिल्ली और पंजाब जैसे शहरों में मजदूरी करने जाते थे। मुन्नी देवी अकेले गाँव में रहती थीं और पारिवारिक समस्याओं के समाधान के लिए उन्हें ऊंची ब्याज दरों पर कर्ज भी लेना पड़ता था। वर्ष 2010 में जीविका मित्र से उन्हें स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली। समूह में शामिल होने के बाद उन्होंने इसके महत्व को समझा और कई प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त किए।

समूह से पहली बार 50,000 रुपये ऋण लेकर उन्होंने एक छोटी दुकान शुरू की। धीरे–धीरे व्यापार में प्रगति होने पर उन्होंने 1,00,000 रुपये पुनः ऋण लिया और दुकान का विस्तार किया। आज उनकी दुकान उनके जीवन का मुख्य आधार है, जिससे वे हर महीने 20,000 से 25,000 रुपये की आमदनी कर रही हैं। उनके पति भी गाँव लौट आए हैं और इस व्यवसाय में मदद करते हैं। मुन्नी देवी ने बच्चों को शिक्षित किया और उन्हें रोजगार के योग्य बनाया। जहाँ पहले उनके पास कुछ भी नहीं था, वहीं अब उनके पास एक पक्का मकान और शौचालय जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

मुन्नी देवी का कहना है कि उनके जीवन में यह सकारात्मक बदलाव जीविका परियोजना के कारण ही संभव हुआ है। इस परियोजना ने न केवल उनके परिवार को आर्थिक स्थिरता दी है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और एक सफल उद्यमी बनने का अवसर भी प्रदान किया है। मुन्नी देवी अब गाँव की अन्य महिलाओं को भी उद्यमी बनने हेतु प्रेरित कर रही है।

समूह से सशक्त हुई गायत्री देवी

नवादा जिले के नवादा सदर प्रखंड स्थित कादिरगंज ग्राम पंचायत की रहने वाली गायत्री देवी का जीवन कभी आर्थिक तंगी और संघर्षों से भरा था। उनके पास खेती के लिए भी अपनी कोई जमीन नहीं थी। गायत्री देवी के परिवार में उनके पति, चार बेटियाँ और एक बेटा हैं। उनके पति कादिरगंज बाजार में रोल बेचने का काम करते थे, लेकिन इससे होने वाली आय परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

गायत्री देवी ने वर्ष 2006 में कादिरगंज बाजार में एक ब्यूटी पार्लर शुरू किया। साथ ही कपड़ों की सिलाई भी करने लगी। इस व्यवसाय से उनकी आय में सुधार हुआ और उनका परिवार धीरे–धीरे आर्थिक स्थिरता की ओर बढ़ने लगा। लेकिन चुनौतियाँ तब बढ़ीं, जब बाजार में आधुनिक सुविधाओं से लैस कई नए ब्यूटी पार्लर खुल गए, जिससे उनके पार्लर में ग्राहक कम होने लगे।

वर्ष 2019 में, गायत्री देवी शीतल जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। समूह में शामिल होने के बाद उन्हें कई नई जानकारियाँ और आर्थिक सहायता के अवसर मिले। धन की कमी के कारण वे अपने पार्लर में सुधार नहीं कर पा रही थीं। ऐसे में, उन्होंने समूह से 20,000 रुपये का ऋण लिया और अपने ब्यूटी पार्लर में नई कुर्सियाँ और अन्य फर्नीचर लगवाए। इस छोटे से बदलाव ने उनके ब्यूटी पार्लर में फिर से ग्राहकों को आकर्षित करना शुरू किया। साथ ही, उन्होंने अपने पति के लिए पार्लर के पास ही एक फल की दुकान खुलवा दी। सितंबर 2024 में उन्हें ग्रामीण उद्यमिता कार्यक्रम के तहत 20,000 रुपये का अतिरिक्त ऋण मिला, जिसे उन्होंने ब्यूटी पार्लर और सिलाई के काम में निवेश किया। इस निवेश से उनके व्यवसाय में और सुधार हुआ और उनकी आमदनी में इजाफा होने लगा।

आज गायत्री देवी को ब्यूटी पार्लर और कपड़ा सिलाई के कार्य से हर महीने 8,000–10,000 रुपये की आमदनी हो जाती है, जबकि उनके पति की फल की दुकान से भी लगभग 10,000 रुपये की आय हो जाती है। इस आय से उनका परिवार आर्थिक रूप से सशक्त हो रहा है और परिवार की जरूरतें पूरी हो रही है।

गायत्री देवी का कहना है कि समूह से जुड़ने के बाद उनके जीवन में जो बदलाव आया है, वह प्रेरणादायक है। समूह ने न केवल उन्हें व्यवसायिक ज्ञान दिया, बल्कि आर्थिक मदद के माध्यम से उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाया है। अब वह अपने ब्यूटी पार्लर और सिलाई के कार्य के साथ–साथ इनसे जुड़ी सामग्री की बिक्री भी शुरू करने की योजना बना रही है।

गायत्री देवी की कहानी न केवल उनके गाँव की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा है, बल्कि यह भी साबित करती है कि सही मार्गदर्शन और सामुदायिक सहयोग से हर कठिनाई को पार किया जा सकता है। स्वयं सहायता समूह के साथ ने उनके जीवन को एक नई दिशा दी है। वह अब एक सफल उद्यमी के रूप में जानी जाती है। उनका यह सफर जीविका के प्रयासों और उनके अपने दृढ़ संकल्प का प्रमाण है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार